

चलचित्र

अथवा

सिनेमा

सिनेमा विज्ञान की एक अनूठी देन है। हमारे मनोरंजन के जितने भी साधन हैं, उनमें सिनेमा सबसे सस्ता और उत्तम है। सिनेमा हाल में बैठकर हम मूर्तियाँ, चित्र, अभिनय, नृत्य देखते हैं, गाने सुनते हैं। सब तरह के कला-कौशल एक जगह देखने को मिलते हैं।

सिनेमा का अर्थ है चलचित्र हजारों फोटो की एक रील होती है। उसे फिल्म कैमरे पर चढ़ाकर तेजी से फोटो खींची जाती है। जब इस रील को प्रोजेक्टर पर चढ़ाकर उसे चलाते हैं और पीछे से रोशनी फेंकते हैं तो परछाइयाँ सामने वाले पर्दे पर पड़ती हैं। वे उछलती-कूदती, आती-जाती, नाचती, अभिनय करती दिखाई देती हैं। वे बिल्कुल सजीव लगती हैं।

पहले सिनेमा मूक (अवाक्) होता था। जब इसमें बोलने का प्रबन्ध हो गया, तो इसका आकर्षण बहुत बढ़ गया। बोलने के प्रबन्ध में वैज्ञानिक एडोसन के ग्रामोफोन का बहुत हाथ था।

लगातार कई दिन तक पढ़ते-पढ़ते या काम करते-करते मन ऊब जाता है। सिनेमा देखकर मन फिर तरोंताजा हो जाता है। लगभग तीन घण्टे हम सुन्दर और विशाल सिनेमा-भवन में बैठकर सिनेमा देखते हैं। कई नगरों, पहाड़ों, नदियों को हम देखते हैं। विदेशों के भी सुन्दर दृश्य देखते हैं। रेलगाड़ियों को दौड़ने, जहाजों को तैरते, वायुयानों को उड़ते हुए देखते हैं। समुद्र के अन्दर के, हिम ढकी चोटियों के, खूँखार जानवरों के चित्र देखकर हमारा खूब मनोरंजन होता है। हमारा ज्ञान भी बहुत बढ़ता है।

फिल्म की कहानी में हमारे ही समाज की बातें रहती हैं। इससे हमें अपने समाज के रीति-रिवाजों का पता चलता है। कई बार विद्यालय फिल्म में द्वारा शिक्षा भी दी जाती है। इस तरह चलचित्र बहुत उपयोगी है।

परन्तु फिल्म देखने के नशे में जो विद्यार्थी पढ़ना-लिखना भूल जाते ने
इससे हानि अवश्य होती है। परन्तु इसमें चलचित्र का नहीं हमारा फिल्म
अपना ही दोष है।